कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



भारत में मैनचेस्टर का आना

- 19वीं सदी के प्रारंभ से ही भारत के कपास-बुनकरों के सामने नई समस्याऐं पैदा हो गईं।
- 1772 में ईस्ट इंडिया कंपनी के अफसर हेनरी पतूलो ने कहा था कि भारतीय कपड़े की माँग कभी कम नहीं हो सकती क्योंकि दुनिया के किसी और देश में इतना अच्छा माल नहीं बनता।
- लेकिन 19वीं सदी की शुरूआत में भारत के कपड़ा निर्यात में गिरावट आने लगी जो लंबे समय तक जारी रही।
- 1811-12 में सूती माल का हिस्सा कुल निर्यात में 33 प्रतिशत था जो 1850-51 में यह मात्र 3 प्रतिशत ही रह गया था।

LET'S LEARN TOGETHER

निर्यात में कमी के कारण

- जब इंग्लैंड का कपड़ा उद्योग विकसित हुआ तो वहाँ के उद्योगपति दूसरे देशों से आने वाले आयात को लेकर परेशान दिखाई देने लगे।
- उन्होंने सरकार पर दबाव डाला कि वह आयतित कपड़े पर आयात शुल्क वसूल करे जिससे मैनचेस्टर में बनने वाले कपड़े को बाहरी कपड़े से प्रतिस्पर्धा नहीं करनी पड़े और वह इंग्लैंड में आराम से बिक सकें।
- दूसरी तरफ उन्होंने ईस्ट-इंडिया कंपनी पर दबाव डाला कि वह ब्रिटिश कपड़ों को भारतीय बाजारों में बेचे।
- तब 19वीं सदी की शुरूआत में ब्रिटेन के कपड़ों के निर्यात में नाटकीय वृद्धि हुई।
- 18वीं सदी के आखिर तक ब्रिटेन के सूती कपड़ों का भारत में आयात न के बराबर था।
- 1850 तक आते-आते सूती कपड़ों का भारत में आयात भारतीय आयात में 31 प्रतिशत हो चुका था।
- 1870 तक यह आंकड़ा 50 प्रतिशत से ऊपर चला गया।
- इस प्रकार भारत में कपड़ा बुनकरों के सामने एक साथ दो समस्याऐं थीं -
  (i) उनका निर्यात बाजार ढह रहा था।
  (ii) स्थानीय बाजार भी सिकुड़ने लगा था।
- भारतीय बाजार में मैनचेस्टर से आयतित मालों की भरमार थी।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

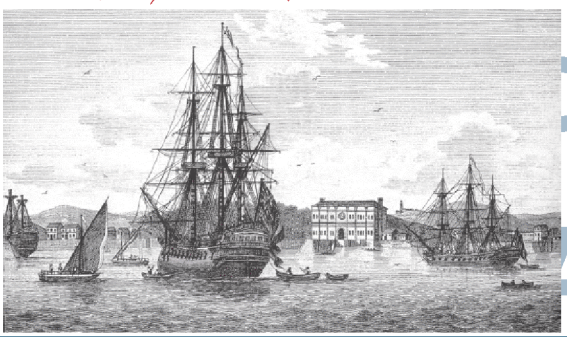
- कम लागत पर मशीनों से बनने वाले सूती कपड़े इतने सस्ते थे कि बुनकर उनका मुकाबला नहीं कर सकते थे।
- 1850 के दशक तक देश के ज्यादातर बुनकर इलाकों में गिरावट और बेकारी के ही किस्सों की भरमार थी।

दि इंडियन इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री रिव्यू - 1985 में उद्धत -
पटना के आयुक्त ने लिखा :-
"ऐसा लगता है कि 20 साल पहले जहानाबाद और बिहार में कपड़ों का बड़े पेमाने पर उत्पादन होता था।
जहानाबाद में यह बिल्कुल बंद हो गया है।
जबकि बिहार में कम उत्पादन होता है।
यह मैनचेस्टर में बनी सस्ती और टिकाऊ वस्तुओं का परिणाम है जिनसे स्थानीय निर्माता प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते।

- 1860 के दशक में बुनकरों के सामने नयी समस्या खड़ी हो गई।
- उन्हे अच्छी कपास नहीं मिल पा रही थी।
- जब अमेरिकी गृह-युद्ध शुरू हुआ और अमेरिका से कपास का आना ब्रिटेन में बंद हो गया तो ब्रिटेन को कपास की जरूरत पड़ी तो वह भारत से कच्चा माल मंगाने लगा।
- भारत से कच्चे कपास के निर्यात में इस वृद्धि से उसकी कीमत आसमान छूने लगी।
- भारतीय बुनकरों को कच्चे माल के लाले पड़ गये।
- उन्हें मनमानी कीमत पर कच्ची कपास खरीदनी पड़ती थी।
- ऐसी सूरत में बुनकरों के सामने पेट पालना संभव नहीं था।

सेंसस रिपोर्ट ऑफ सेन्ट्रल प्रोविसेंज में बुनकरों के कोष्टि समुदाय के बारे में कहा गया था -
"भारत में अन्य भागों में महीन कपड़ा बनाने वाले बुनकरों की तरह कोष्टियों का भी बुरा समय चल रहा है।
वे मैनचेस्टर से इतनी भारी तादाद में आने वाली आकर्षक चीजों का मुकाबला नहीं कर सकते। हाल के सालों में वे बड़ी संख्या में यहां से जाने लगे हैं।
वे मुख्य रूप से बिहार का रूख कर रहे हैं जहां दिहाड़ी मजदूर के तौर पर उन्हें रोजी रोटी मिल जाती है।"

बॉम्बे हार्बर, 18वीं सदी के आखिर का चित्र



- बम्बई और कलकत्ता 1780 के दशक में बड़े व्यापारिक बंदरगाहों के रूप में विकसित होने लगे थे।
- यह पुरानी व्यापारिक व्यवस्था के पतन और औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के विकास का समय था।

LET'S LEARN TOGETHER
Gyan
App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- 19वीं सदी के आखिर में बुनकरों और कारीगरों के सामने एक और समस्या आ गई।
- अब भारतीय कारखानों में उत्पादन होने लगा और बाजार मशीनों से बनी चीजों से पट गया था।
- ऐसे में बुनकर उद्योग किस तरह कायम रह सकता था?

फैक्ट्रियों का आना

- बंबई में पहली कपड़ा मिल 1854 में लगी और दो साल बाद उसमें उत्पादन होने लगा।
- 1862 तक बंबई में ऐसी 4 मिलें काम कर रही थीं।
- इनमें 94,000 तकलियाँ और 2150 करघे थे।
- उसी समय बंगाल में जूट मिलें खुलने लगी।
- वहां देश की पहली जूट मिल 1855 में और दूसरी इसके 7 साल बाद 1862 में चालू हुई।
- उत्तरी भारत में एल्गिन मिल 1860 के दशक में कानपुर में खुली।
- इसके बाद अहमदाबाद की पहली कपड़ा मिल भी चालू हो गयी।
- 1874 में मद्रास में भी पहली कताई और बुनाई मिल खुल गई।

प्रारंभिक उद्यमी

- देश के विभिन्न भागों में तरह तरह के लोग उद्योग लगा रहे थे।
- बहुत सारे व्यवसायिक समूहों का इतिहास तो चीन के साथ व्यापार के जमाने से चला आ रहा था।
- 18वीं सदी के आखिर से ही अंग्रेज भारतीय अफीम का चीन को निर्यात करने लगे थे जिसके बदले में चीन से चाय खरीदते थे जो इंग्लैण्ड जाती थी।
- इस व्यापार में बहुत सारे भारतीय कारोबारी सहायक की हैसियत में पहुंच गये थे।

ये (i) पैसा उपलब्ध कराते थे।
(ii) आपूर्ति सुनिश्चित करते थे।
(iii) माल को जहाजों में लाद कर रवाना करते थे।

- व्यापार में पैसा कमाने के बाद उनमें से कुछ व्यवसायी भारत में औद्योगिक उद्यम स्थापित करना चाहते थे।
- बंगाल में द्वारका प्रसाद टैगोर ने चीन के साथ व्यापार में खूब पैसा कमाया और वे उद्योगों में निवेश करने लगे।
- 1830-1840 के दशक में उन्होंने 6 संयुक्त उद्यम कंपनियां लगा ली थी।
- 1840 के दशक में आये व्यापक व्यवसायिक संकटों में औरों के साथ-साथ टैगोर के उद्यम भी बैठ गए।
- लेकिन 19वीं सदी में चीन के साथ व्यापार करने वाले बहुत सारे व्यवसायी सफल उद्योगपति भी साबित हुए।

सफल उद्योगपति

- बम्बई में डिनशॉ पेटिट और बाद में जमशेदजी नुसरवानजी टाटा जैसे पारसियों ने भी विशाल औद्योगिक साम्राज्य स्थापित किया।
- इन्होंने आंशिक रूप से चीन को निर्यात करके और आंशिक रूप से इंग्लैंड को कच्ची कपास निर्यात

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

करके पैसा कमा लिया था।

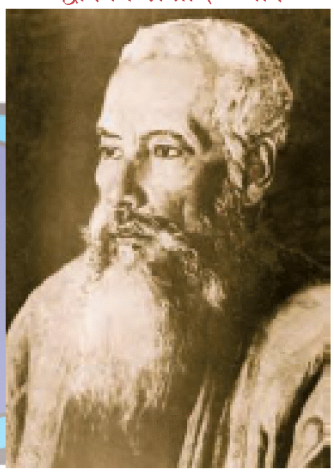
- 1917 में कलकत्ता में देश की पहली जूट मिल लगाने वाले मारवाड़ी व्यवसायी सेठ हुकुमचंद ने भी चीन के साथ व्यापार किया था।
- यही काम प्रसिद्ध उद्योगपति जी.डी. बिड़ला के पिता और दादा ने किया।

जमशेदजी जीजीभोये



- जमशेद जी जीजीभोये एक पारसी बुनकर के बेटे थे।
- अपने समय के बहुत सारे लोगों की तरह उन्होंने भी चीन के साथ व्यापार और जहाजरानी का काम किया था।
- उनके पास जहाजों का एक विशाल बेड़ा था।
- अंग्रेज और अमेरिकी जहाज कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा के कारण 1850 के दशक तक उन्हें सारे जहाज बेचने पड़े।

द्वारका प्रसाद टैगोर



- द्वारका प्रसाद टैगोर का विश्वास था कि भारत पश्चिमीकरण और औद्योगीकरण के रास्ते पर चलकर ही विकास कर सकता है।
- उन्होंने जहाजरानी, जहाज निर्माण, खनन, बैंकिंग, बागान और बीमा क्षेत्र में निवेश किया था।

LET'S LEARN TOGETHER

उद्योगों के लिए पूँजी

- उद्योगों के लिए पूँजी इकट्ठा करने के लिए अन्य व्यापारिक नेटवर्कों का सहारा लिया गया।
- मद्रास के कुछ सौदागर बर्मा से व्यापार करते थे जबकि कुछ के मध्य-पूर्व अफ्रीका में संबंध थे।
- इसके अलावा कुछ वाणिज्यिक समूह विदेशी व्यापार ना करके भारत में ही व्यवसाय करते थे।
- वे (i) एक जगह से दूसरी जगह माल ले जाते थे।
  (ii) सूद पर पैसा चलाते थे।
  (iii) एक शहर से दूसरे शहर में पैसा पहुंचाते थे।
  (iv) व्यापारियों को पैसा देते थे।
- जब उद्योगों में निवेश के अवसर आये तो उनमें से बहुतों ने फैक्ट्रियां लगा ली।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

साझेदारों की टोली : जे. एन. टाटा, आर.डी. टाटा, आर. जे. टाटा और सर डी. जे. टाटा



- 1912 में जे.एन. टाटा ने जमशेदपुर में भारत का पहला लौह एवं इस्पात संयंत्र स्थापित किया।
- भारत में लौह एवं इस्पात उद्योग, कपड़ा उद्योग के काफी बाद शुरू हुआ।
- औपनिवेशिक भारत में औद्योगिक मशीनरी, रेलवे और लोकोमोटिव का ज्यादातर आयात ही किया जाता था।
- इसलिए स्वतंत्रता मिलने तक भारी उद्योग कोई खास आगे नहीं बढ़ सकता था।

उद्योगपतियों की परेशानी

- जैसे-जैसे भारतीय व्यापार पर औपनिवेशिक शिकंजा कसता गया, वैसे-वैसे भारतीय व्यवसायियों के लिए जगह सिकुड़ती गयी।
- उन्हें अपना तैयार माल यूरोप में बेचने से रोक दिया गया।

अब वे (i) कच्चे माल (ii) अनाज (iii) कच्ची कपास (iv) अफीम (v) गेहूं (vi) नील का ही निर्यात कर सकते थे, जिनकी अंग्रेजों को जरूरत थी।

- धीरे धीरे उन्हें जहाजरानी व्यवसाय से भी बाहर धकेल दिया गया।

यूरोपीय प्रबंधकीय एजेंसियाँ

- प्रथम विश्व युद्ध तक यूरोपीय प्रबंधकीय एजेंसियाँ भारतीय उद्योगों के विशाल क्षेत्र पर नियंत्रण रखती थीं।
- इनमें बर्ड हीगलर्स एंड कंपनी, एंड्रयू यूल और जार्डीन स्किनर एंड कंपनी सबसे बड़ी कंपनियाँ थीं।
- इनके प्रमुख कार्य थे –

(i) ये एजेंसियाँ पूँजी जुटाती थीं।

(ii) संयुक्त उद्यम कंपनियाँ लगाती थीं तथा उनका प्रबंधन संभालती थीं।

- ज्यादातर मामलों में भारतीय फाइनेंसर पूंजी उपलब्ध कराते थे।
- जबकि निवेश और व्यवसाय से संबंधित फैसले यूरोपीय एजेंसियाँ लेती थीं।
- यूरोपीय व्यापारियों व उद्योगपतियों के अपने वाणिज्यिक परिसंघ थे जिनमें भारतीय व्यवसायियों को शामिल नहीं किया जाता था।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here